उत्तराखण्ड राजभवन में वन्यजीव सप्ताह समारोह में माननीय राज्यपाल महोदय का संबोधन

(06 अक्टूबर 2022)

वन्यजीव सप्ताह के इस समारोह में उपस्थित कैबिनेट मंत्री श्री सुबोध उनियाल जी, श्री गणेश जोशी जी, शासन के सचिव गण, वन सेवा, पुलिस सेवा एवं अन्य विभागीय अधिकारी गण!

हम प्रतिवर्ष **दो अक्टूबर से आठ अक्टूबर** के बीच **वन्यजीव सप्ताह** मनाते हैं और वन्यजीवों की सुरक्षा के उपायों पर विचार करते हैं।

हम सौभाग्यशाली हैं कि उत्तराखण्ड में वन्य जीवों की सुरक्षा और संवृद्धि के लिए बहुत ही बड़े स्तर पर कार्य किया जा रहा है।

हमारे प्रदेश में छः राष्ट्रीय उद्यान, सात वन्यजीव विहार और चार संरंक्षित क्षेत्र घोषित किये गये हैं। इस प्रकार प्रदेश का 14.77 प्रतिशत भू–भाग वन्यजीवों और जैवविविधता और जैव संपदा की सुरक्षा के लिए संरक्षित किया गया है।

भारत में नदी, पर्वत, जीव, जन्तु और वनस्पति सभी को बहुत महत्व दिया गया है।

वन्य जीव हमारी आस्था और परंपराओं के सुन्दर प्रतीक हैं। माँ दुर्गा जी की सवारी शेर, श्री गणेश जी का मूषक, कार्तिकेय जी का मोर, माँ सरस्वती का वाहन हंस, गंगा मैय्या का वाहन मगरमच्छ एवं यमुना माँ की सवारी कछुआ, माता लक्ष्मी जी का वाहन उल्लू है तो भगवान भोले नाथ के गले में तो सर्प शोभित होते हैं। प्रकृति और संस्कृति का यह अनूठा संगम भारतीय संस्कृति में ही संभव है।

देवभूमि उत्तराखण्ड वन भूमि भी है। हिमालय के उन्नत शिखर, मध्य हिमालय, शिवालिक पहाड़ियों और समतल मैदानों के बीच जैवविविधता के अनोखे उदाहरण विद्यमान हैं।

उत्तराखण्ड के वनों के विकास में यहां के लोगों का बहुत बड़ा योगदान है। चिपको वुमेन गौरा देवी जी, चण्डी प्रसाद भट्ट जी से लेकर अनिल जोशी जी तक अनगिनत पर्यावरण दिग्गज महापुरूषों का उत्तराखण्ड के वन एवं पर्यावरण के संरक्षण में अनोखा योगदान है।

हमारे लिए यह गौरव की बात है कि आप सभी की सहभागिता में उत्तराखण्ड की सरकार वनों के प्रबन्धन में अच्छे प्रयास कर रही है।

उत्तराखण्ड में 71 प्रतिशत वन क्षेत्र है और इन वनों में अनेक दुर्लभ पशु–पक्षियों एवं पेड़–पौधों की प्रजातियों की रक्षा की जा रही है।

इस वनभूमि पर 12 मेगा हॉटस्पाट क्षेत्र हैं। उत्तराखण्ड राज्य में 5 हजार पौधों की प्रजातियां पाई जाती है।

यहां 1650 औषधीय प्रजातियों के पौधों के बल पर हम इसे **'हर्बल स्टेट ऑफ इण्डिया'** कह सकते हैं।

150 प्रजातियों के अर्किड 102 प्रजतियों के स्तनधारी जीव, 700 प्रजातियों के पक्षी, 124 प्रजाति की मछलियां 19 प्रजातियों के उभयचरी जीव, 69 प्रजाति के सरीसृप और 500 प्रजाति की तितलियां हैं जो यहां की जैव विविधता और समृद्धि को प्रदर्शित करती हैं।

उत्तराखण्ड की भूमि में स्थित कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान में सबसे अधिक 231 बाघ चिन्हित किये गये हैं।

उत्तराखण्ड की इस जैविक विरासत पर हमें गर्व होना चाहिए साथ ही इस जैव विविधता को बचाए रखने की जिम्मेवारी भी हमारी ही है।

कुछ दिन पूर्व हिन्दुस्तान की धरती पर 70 वर्षों के बाद चीते की वापसी करायी गई है। यह भारत के इतिहास का एक गौरवशाली पल है जिसमें दुनिया में पहली बार एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप, समुद्र के पार एक वन्यप्राणी को उसके पुराने क्षेत्र, जहां से वह विलुप्त हो गया था, पुर्नस्थापित किया गया।

यह हमारे देश की वन्यजीवों के संरक्षण के सकंल्प का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह नये भारत का सकेंत है, जहां हम नित नये आयाम रचते हैं।

यह हमारी प्रकृति और संस्कृति के संगम का अनूठा संयोजन है। उत्तराखण्ड भी अपनी इस विरासत पर गर्व करते हुए ईकॉनोमी के साथ–साथ ईकोलॉजी को भी उतना ही महत्व देता है अर्थात् विकास भी और सरंक्षण भी ।

हमारे प्रदेश की अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख आधारप्रकृति आधारित पर्यटन है। हिमालय की उच्च श्रृंखलाओं से अनवरत कल–कल बहती गंगा और यमुना जैसी नदियां, घने वन और उसमें रहने वाले वन्यजीव बरबस ही पर्यटको को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

इसके लिए हमें अपने वनों के प्राकृतिक स्वरूप को बचाना भी है और साथ ही स्थानीय परिवेश के अनुसार ऐसी सुविधाएं भी बनानी है जिससे पर्यटन को बढ़ावा मिले और स्थानीय रोजगार के अवसर भी विकसित हो।

इस देवभूमि में प्रकृति आधारित पर्यटन का स्वरूप स्थानीय परंपराओ, सांस्कृतिक मूल्यों एवं संवेदनाओं के अनुरूप हो। इसमें किसी भी प्रकार की विकृति का कोई स्थान नही है ।

पक्षी अवलोकन की प्रदेश में अपार संभावनाएँ हैं। मुझे बताया गया है कि भारत में पाये जाने वाले 1300 पक्षी प्रजातियो में 700 उत्तराखण्ड में चिन्हित की गयी हैं।

हर वर्ष मनाये जाने वाले बर्ड फेस्टिवल को और प्रचारित–प्रसारित करने की आवश्यकता है।

वन्यजीव सप्ताह के इस अवसर पर हम सबको वन्य जीवों के संरक्षण के लिए संकल्प लेने की आवश्यकता है।

मुझे विश्वास है कि हम वन एवं वन्यजीवों की प्राकृतिक धरोहर को संरक्षित करने में अपना योगदान अवश्य करेंगे।

वन्यजीव सप्ताह के इस अवसर पर मैं वन विभाग के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों से अपेक्षा करता हूं कि वे राज्य के प्रत्येक जनपद में कम से कम एक नये पर्यटन स्थल को चिन्हित कर उसे पर्यटको के लिए सुलभ बनायें।

वन्यजीव संरक्षण में कुछ चुनौतियां हमारे सामने हैं इनमें मानव वन्यजीव संघर्ष, रेल–सड़क दुर्घटनाओं में वन्यजीवों की हानि, वनों में आग लगने की दुर्घनाएं मुझे काफी आहत करती हैं।

इन आपदाओं के स्थायी समाधान खोजने होंगे। आर्टिफिसियल इंटेलिजेंस, ड्रोन टैक्नोलॉजी और न्यू टैक्नॉलाजी के बल पर यह संभव है। आधुनिक तकनीक को उपयोग में लाया जाना होगा।

वन विभाग के कर्मी विपरीत परिस्थितियों में चुनौतियों के साथ एक बड़ी सेवा कर हरे हैं। आपके प्रयास प्रशंसनीय हैं। मैं जानता हूं कि आप सभी के काम का समाज में बहुत सम्मान और योगदान है।

आप वो हैं जो वर्तमान और भविष्य के हित में भी कार्य करते हैं।

वन्यजीव सप्ताह के इस आयोजन के लिए हार्दिक बधाई अनेक शुभकामनाएं देता हूँ।

जय हिन्द।